मध्यकालीन भक्ति काल में हिन्दी ज्ञान परंपरा के विविध आयाम

निशा जैन

सहायक प्रोफेसर, क्राइस्ट अकादेमी इंस्टिट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडीज.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15795957

ABSTRACT:

भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा और मध्यकालीन साहित्य इन दोनों के मध्य घनिष्ठ संबंध रहा है। ये दोनों ही भारतीय संस्कृति और हमारे इतिहास की एक बेजोड़ कड़ी रहा है। मध्यकालीन साहित्य के भक्ति काल ने भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पक्षों को बेहतरीन तरीके से दीप्तिमान किया है। जहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा, वैदिक उपनिषद और बौद्ध काल में प्रखर हुए, वहीं मध्यकालीन साहित्य ने इस ज्ञान को भाषा और भक्ति से जोड़ा। वेदों की गहनता, उपनिषदों की गूढ़ता तथा पुराणों की सांस्कृतिक गौरव जब मध्यकालीन कवियों के मुख में मुखरित हुआ तो भक्तिकाल प्रेम, भक्ति और ज्ञान का जीत जाता निगम बन गया। निर्गुण व सगुण भक्ति के माध्यम से भक्ति का एक विस्तृत रूप देखने को मिलता है, जो हमें हिंदी ज्ञान परंपरा से जोड़ता है। जहाँ कबीर जो निर्गुण भक्ति के उपासक हैं, उनके दोहों से आत्मज्ञान की चमक देखने को मिलती है, वहीं सगुण उपासक तुलसी की चौपाइयों में धर्म और नीति का समर्पण भाव झलकता है। मीरा के भजन प्रेम और अनन्या भक्ति की छाप छोड़ते हैं, वहीं सूर के पदों की भक्ति, मधुर रसधार बनकर बहती है। मध्यकालीन साहित्य के भक्तिकालीन काव्यधारा ने भारत के ज्ञान का केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं रखकर ज्ञान परंपरा से जोड़ते हुए अनेक भाषाओं में उतारा, जिससे समाज में धार्मिकता, प्रेम, समभाव, आध्यात्मिकता और नैतिकता का सूर्योदय हुआ। इस शोध पत्र में मध्यकालीन भक्ति काव्यधारा में भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है जिसमें निर्गुण भक्ति, सगुण भक्ति, कबीर दास, तुलसी कृत रामभक्ति व सूर और मीरा कृत कृष्णभक्ति, नीति ज्ञान, प्रेम मार्ग, आत्मसमर्पण आदि की समीक्षा की गई है।

KEYWORDS:

भारतीय ज्ञान परंपरा, भक्ति काव्य, निर्गुण भक्ति, सगुण भक्ति, कबीरदास, तुलसीदास, राम भक्ति, कृष्णभक्ति, मीरा बाई, सूरदास, अद्वैतवाद, नीति, वेदान्त, प्रेम मार्ग, समर्पणभाव इत्यादि.

भारतीय ज्ञान परंपरा एक गहरी खाई अथवा धरती की निचली आंतरिक संरचना के समान है, जो अनेक रहस्यमयी परतों से युक्त है। यही परतें एक एक कर सभी के सामने खुलती जाती हैं जो वर्तमान समय में हमारे समक्ष हैं। ये परतें वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों, पुराणों, भाषाओं, बौद्ध और जैन ग्रंथों से लेकर भक्ति और सूफी साहित्य से प्रवाहमान होकर हिंदी साहित्य में अपने रहस्यों को उजागर करती रही है। आदिकाल से ही समाज, संस्कृति, दर्शन और साहित्य से भारतीय ज्ञान परंपरा प्रभावित होती आई है। जिसमें महाभारत एवं रामायण जैसे महाकाव्य एक धरोहर के रूप में संचित हैं, जो इस भारतीय ज्ञान परंपरा को विकसित कर मध्यकालीन भक्ति काल में अधिक तेजी से अभिव्यक्त हुए हैं। इनका श्रेय हमारे भक्तिकाल के तुलसीदास, कबीरदास, मीराबाई एवं सूर जैसे महाकवियों को जाता है। ऐसे में मध्यकालीन भक्ति काव्य इस परंपरा की एक मजबूत कड़ी बना है, जहाँ काव्यात्मक अभिव्यक्ति के साथ साथ रहस्यमयी दार्शनिक और नैतिक सिद्धान्त समाहित हैं।

भक्ति काल के सगुण एवं निर्गुण विचारक कवियों ने इसी परंपरा को जनमानस तक पहुंचाया है और समाज को धर्म, आध्यात्मिकता, नैतिकता, प्रेम मार्ग व भक्ति मार्ग पर चलाने के लिए अग्रसर किया है। संतों व कवियों की यह परंपरा वर्तमान में काव्य और समाज में एक बहुमूल्य निधि के रूप में संचित व जीवित है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने मध्यकालीन भक्ति काव्य को सगुण व निर्गुण भक्ति के रूप में अत्यधिक प्रभावित किया है, जिसका मुख्य आधार आत्मा व परमात्मा के बीच का संबंध, अद्वैतवाद, कर्म और भक्ति का मिलन था। भक्तिकाल कवियों द्वारा जनमानस के प्रत्यक्ष इसे बहुत ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिससे जनमानस को धर्म, मोक्ष, आध्यात्मिकता, समर्पण भाव, प्रेम भाव व नीति ज्ञान का बोध कराते हुए सामाजिक चेतना को उभारा और भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया। संत कवियों ने भगवान के प्रति अपनी भक्ति और प्रेम को कविताओं में अभिव्यक्त किया है। शंकराचार्य, सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास, मीराबाई आदि श्रेष्ठ संतों एवं कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से भगवान के प्रति भक्ति, उनके चरित्रों का गुणगान, उनकी लीला, गुरूओं के प्रति आदर, प्रेम भाव व समर्पण आदि का वर्णन किया।

1. सगुण व निर्गुण भक्ति

मानव में एकता का मूल आधार ईश्वरीय एकता है। भक्ति काल में इस संदेश को विभिन्न कवियों व संतों ने स्पष्ट किया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में ब्रह्म के स्वरूप सगुण-निर्गुण को लेकर उत्पन्न हुए मतभेदों को दूर करते हुए कहा है-

'सगुनहीं अगुनहीं नहिं कछु भेदा।
गावहिं मुनि पुराण बुध बेदा।
अगुण अरूप अलख अज जोई। जगत प्रेम बस सगुण सो होई।।'

अभिप्राय है कि भक्ति चाहे सगुण अथवा निर्गुण जिस भी रूप में की जाए, इसमें कोई भेद नहीं है। जो निर्गुण, अरूप, निराकार, अव्यक्त और आजन्मा परम ब्रह्म सत्य है, वही भक्ति के प्रेमवश सगुण हो जाता है। इस प्रकार वेद और भारतीय ज्ञान परंपरा में ब्रह्म के स्वरूप पर चर्चा विद्यमान है। यदि बारीकी से इसका अध्ययन करें तो मध्यकालीन संतों ने अपने संदेशों के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक व आध्यात्मिक जीवन को सरल बनाया है।

2. कबीरदास

कबीरदास जी ने सदैव निर्गुण भक्ति व अद्वैतवाद को माना है। इस प्रकार की भक्ति का समर्थन किया है जो जन्म और मरण के बंधनों से परे है। इनके दोहों में भारतीय ज्ञान परंपरा की गहरी छाप देखने को मिलती है, जो बाह्य आडंबरों का विरोध करती है।

'माला पहरयी कुछ नहिं, भगति न आई हाथ।
दाढ़ी मूँछ मुँड़ाई करि, चल्या जगत के साथी।।[1]

इस दोहे में कबीर जी ने बाह्य आडंबरों को छोड़कर आंतरिक साधना पर ज़ोर दिया है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्वपूर्ण तत्व है। भक्ति को बाहरी कर्मकांडों से मुक्त कर आंतरिक व आत्मिक शुद्धता के रूप में भक्तिभाव को जगाना ही कबीरदास जी का मुख्य उद्देश्य था।

गुरु शिष्य परंपरा: गुरु का स्थान हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा में सर्वोच्च है। गुरुकुल परंपरा में शिष्य गुरु की आज्ञानुसार ज्ञान को हासिल करते हैं। गुरु ही उनका सच्चा पथ प्रदर्शक होता है, जो शिष्य को अंधेरे से उजाले की ओर ले जाते हुए उन्हें सही रास्ता दिखाते हुए उन्हें लक्ष्य तक पहुंचाते हैं तथा अनुशासन का पालन करते हुए जीवन यापन की सीख देते हैं। गुरु के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कबीर दासजी ने कहा है-

'गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागौं पायँ।
बलिहारी गुरु आपने, गुरु गोबिंद दियो मिलायं'।।[2]

अतः समस्त भक्तिकाल काव्य धारा में गुरु के बिना किसी भी प्रकार के ज्ञान या पहचान की कल्पना भी असंभव है।

3. तुलसीदास

तुलसीदासजी ने रामचरित मानस जैसी रचनाओं के माध्यम से धार्मिक ज्ञान को लोकप्रिय बनाया है। तुलसीदासजी ने भारतीय ज्ञान परंपरा में भक्ति और ज्ञान के बीच उचित सामंजस्य स्थापित किया है। रामचरित मानस के माध्यम से उन्होंने श्री राम को आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया और भक्तों को मोक्ष का मार्ग भी बताया। इनकी रचनाएँ भक्ति और ज्ञान के मार्ग को दर्शाने के साथ साथ परोपकार की भावना को उजागर करती हैं।

'परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।[3]

यहाँ इन्होंने जनमानस में परोपकार की भावना को गहराई से प्रस्तुत किया है, जो भारतीय जीवन मूल्यों एवं आदर्शों का पवित्र रूप है। तुलसी ने रामचरित मानस में भारतीय ज्ञान परंपरा को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया है।

'कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करहिं सो तस फल चाखा।।[4]

इस चौपाई में वेदांत और कर्म के सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार है। तुलसी जी ने अपनी रामभक्ति के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने के मार्ग को प्रशस्त किया। इन्होंने राम को ईश्वर का सगुण रूप मानते हुए उनके आदर्श रूप को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया है। उनके काव्यों में वेदों व उपनिषदों के सिद्धांतों का प्रभाव भी देखा जा सकता है।

4. सूरदास

सूरदास जी भारतीय ज्ञान परंपरा के एक प्रमुख कवि रहे हैं, जिन्होंने अपने काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्ञान दर्शन को प्रस्तुत किया है। भक्ति, प्रेम और ईश्वर के रूप में व उनके प्रति समर्पण भावना से ओतप्रोत सूरदासजी का काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा से पूर्ण रूप से जुड़ा है। इस परंपरा के अन्य तत्वों जैसे सत्य, प्रेम, कर्तव्य, संतोष और परोपकार जैसे नैतिक मूल्य इनके काव्य में देखने को मिलते हैं। इनकी रचनाएँ मुख्यतः कृष्ण पर आधारित हैं।

'ऐसे कान्हा भक्त हितकारी, प्रभु तेरो वचन भरोसों सांचौ।'[5]

सूरदास जी का मानना था कि ईश्वर अपने भक्तों पर असीम कृपा रखते हैं। इस दोहे के द्वारा उन्होंने ईश्वर को भक्ति, वात्सल्य और हितकारी कहा है।

'सुनि परमित पीय प्रेम की चातक चितवती पारि।
घन आशा सब दुख सहैं, अंत ना याचौं वारी।।[6]

इस दोहे के माध्यम से सूरदासजी ने प्रेम अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। प्रिय के प्रेम या परिणाम के महत्त्व को जानकर पपीहा बादल की ओर निरंतर देखता रहता है। उसी मेघ की आशा में वह दुख सहता है पर मरते दम तक भी पानी के लिए प्रार्थना नहीं करता।

घुटुरुनि चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत्तमधुपगन मादक मधुहिं पिए।
कठुला कंठ वज्र केहरि नख राज तरु चिर हिए।[7]

इन्होंने अपने काव्य में कृष्ण बाल-लीलाओं का अद्भुत वर्णन किया है। इस वर्णन में स्वाभाविकता और वात्सल्य रस का सुंदर योग मिलता है। सूरदास जी ने बालरूप कृष्ण का वर्णन बखूबी वर्णन किया है। इस दोहे में कृष्ण के स्वरूप की सुंदरता का वर्णन करते हुए कवि ने उनके सुंदर गालों तथा चंचल आँखों की चर्चा की है। उनके माथे पर गोरोचन का तिलक लगा है। बालों की लटाएँ लटक रही हैं, जो मुख पर फैल रही हैं। ऐसा लगता है मानो मस्त भौंरे गालों रूपी फूलों का मादक रस पी रहे हों। उनके गले में कठुला और शेर का नाखून अत्यंत शोभा दे रहा है।

सूरदास जी के काव्य जहाँ एक तरफ अपने प्रभु के रूप और लीलाओं का वर्णन है, वहीं दूसरी तरफ भागवत पुराण की शिक्षाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, जहाँ भक्ति को सर्वोत्तम साधन बताया गया है। वेद, उपनिषद्, भगवतगीता और भक्ति आंदोलन की झलक इनके काव्यों में देखी जा सकती है।

5. मीरा बाई

जहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा में समर्पण भाव की बात आए वहाँ मीरा सर्वोच्च स्थान रखती है, जिन्होंने अपना पूरा जीवन कृष्ण भक्ति को समर्पित कर दिया। अतः उनका भक्तिभाव भारतीय ज्ञान परंपरा के आत्मसमर्पण के सिद्धांत को प्रतिपादित करता है।

'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।
मैं तो मेरे नारायण की आप ही हो गई दासी रे।'[8]

इस पदावली में उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन कृष्ण भक्ति में समर्पित कर दिया, जिसके लिए उन्होंने लोकलाज सब त्यागी और कृष्ण प्रेम भक्ति को प्रेम भाव से सींचा।

'मोर मुकुट पीताम्बर सोहे कुंडल झलकत हीर।'[9]

इस पंक्ति के द्वारा उन्होंने अपने मन मोहन अपने गोपाल के रूप का वर्णन किया है।

राणाजी म्हाने या बदनामी लगे मीठी।
कोई निंदौ, कोई बिंदौ, मैं चलूँगी, चाल अनूठी।।[10]

मीरा ने इन पंक्तियों के द्वारा सत्संग की निंदा करने वालों को दुर्जन माना है। वे उन्हें धिक्कारती हैं। पति परमेश्वर करने वाले सामंती नैतिकता की कोई परवाह न करते हुए मीरा ने गिरधर को अपना सच्चा प्रेम बताया है। इस पद से मीरा की विकसित सामाजिक चेतना और राजनीतिक विवेक का ज्ञान होता है, जो राज्य सत्ता के दमनकारी अमानवीय रूप को प्रकट करता है। वस्तुतः विसंगत यथार्थबोध के प्रति मानवीय चित्त की स्वाभाविक अभिव्यक्ति की गई है। इस प्रकार मीराबाई की साधना प्रेम और भक्ति के समर्पण भाव को व्यक्त के साथ ही साथ अमानवीय अभिव्यक्ति को भी दर्शाती है।

निष्कर्ष:

अतः हम कह सकते हैं कि भक्तिकाल के जितने भी भक्त संत व कवि रहे थे, सभी ने संयमशील जीवन पर बल दिया है। इन्होंने मानवीय संबंध के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। सूरदास का संपूर्ण काव्य मनुष्य और ईश्वर के बीच मधुर संबंध की सीख देता है। सगुण और निर्गुण संतों ने नैतिक ज्ञान, सत्यता, समर्पण, प्रेम भाव आदि को कविताओं का आधार बनाया है। भारतीय ज्ञान परंपरा और मध्यकालीन भक्ति कवियों ने भारतीय संस्कृति को उच्चतर मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिकता से समृद्ध करने के साथ साथ जीवन के नैतिक और संयमशील आचरण पर विशेष बल दिया है। सूरदास एवं मीराबाई के काव्य में प्रेम का महत्त्व, अंतरात्मा की खोज और अन्याय के खिलाफ़ प्रतिरोध करने का संदेश है। साथ ही साथ समर्पण की भावना से ओतप्रोत है। विभिन्न संतों ने सर्वधर्म समानता और सामाजिक समरसता का संदेश दिया है। अतः हम कह सकते हैं कि समग्र भक्ति काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा की सर्वोत्तम उपलब्धि है।

Reference:

1. कबीर ग्रंथावली, राम किशोर शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, संस्करण 2018, पृष्ठ सं- 228
2. साहित्य वैभव_मध्यकालीन पद्य_कबीर के दोहे_ पृष्ठ सं- 99
3. भक्ति काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा_डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा, पृष्ठ सं- 1
4. भक्ति काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा_डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा, पृष्ठ सं- 1
5. http://m.bharatdiscovery.org/india/सूरदास_की_भक्ति_भावना_date-22/5/2025_time-8:40am
6. काव्य संगम, सं-प्रो. शेखर, प्रकाशन-प्रासारंग, सूर पदावली, पृष्ठ सं- 9
7. मीरा- पदावली, सं- श्रीमती विष्णुकुमारी, श्रीवास्तव (मंजु), प्रकाशक- हिन्दी भवन, दूसरा संस्करण, पृष्ठ सं- 69,21
8. वहीं पृष्ठ सं- 28
9. वहीं पृष्ठ सं- 63
10. वहीं पृष्ठ सं- 61

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.